## (E - 117) देखोजी एक परमगुरुने कैसा...

देखोजी इक परम गुरुने कैसा ध्यान लगाया है, देखोजी० (टेक)

घरके भोग रोग सम लागे, बनका बास सुहाया है;
काम क्रोध माया मद त्यागी, नगन जु भेष बनाया है। देखोजी० १

बरसाकाल बसत है तरुतल समताभाव दिखाया है;
लिपटें डांस जहर विषयाले, खेद न मनमें ल्याया है। देखोजी० २

शीतकाल तटनीतट उपर, परत तुषार, न छाया है;
कपै न देह चलै चौबारी, जैनजति कहलाया है। देखोजी० ३

ग्रीषमकाल बसैं परवत पर, सूरज उपर आया है;
चलत पसेव जरत अति काया, कर्मकलंक बहाया है। देखोजी० ४

ऐसे गुरु के चरन पूजकर, मनवांछित फल पाया है,
'दौलत' ऐसे जैनजतिको बारबार सिर नाया है। देखोजी० ५